''हमारा तीर्थस्थल''

''श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर''

''श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर'' मध्य भारत के क्षेत्र अवन्तीपुर बड़ोदिया जिला – शाजापुर, तहसील – शुजालपुर से 42 किलोमीटर दूर शाजापुर भोपाल रोड पर एवं आष्टा जिला–सीहोर से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित है। इसकी आबादी करीब 6 हजार है। उक्त कस्बा नदी के किनारे बसा है।

किवदन्ति है कि आज से करीब 1000–1100 पूर्व राजस्थान के डीडवाना के डीडू माहेश्वरीयों के 72 खाप में से 32 खाप के माहेश्वरी राजा के दुर्व्यवहार से गुजरात के धाक–गढ़ में बसे और धाकड़ कहलाये। कालांतर में वहॉ की राजनैतिक परिस्थितियाँ बिगड़ने पर पुनः विक्रम संवत 1200 अर्थात् आज से लगभग 800 वर्ष पूर्व अवन्तीपुर बड़ोदिया में पड़ाव डाला। वहाँ व्यापार व्यवसाय में उन्नति एवं समाज की आर्थिक स्थिति सुधारने में भगवान महेश का आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु, भगवान महेश क मंदिर का निर्माण विक्रम संवत 1272 में किया व इसका नाम **''श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर''** रखा गया।

सन् 1982 के बंदोबस्त कानून के अनुसार अब यह मंदिर कलेक्टर शाजापुर के आधिपत्य में है।

इस मंदिर परिसर में श्री हनुमान जी का मंदिर है जो खेड़ापति हनुमान के नाम से जाना जाता है एवं पास ही एक चबूतरे पर सीतलामाता का मंदिर है।

मंदिर का निरीक्षण करने पर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि इस मंदिर का समय–समय पर पुनः निर्माण हुआ है और कुछ वर्षों पूर्व भी स्व. सेठ परसराम–सेवाराम चाण्डक खण्डवा वालों ने अपनी ओर से इसका सभा मंडप फिर से बनवाया था। स्व. हजारीलालजी तापड़िया पीपलरावां वालों ने मंदिर में भगवान श्रीराम, लक्ष्मण,सीताजी एवं विष्णु–गुरूड़जी की संगमरमर की मूर्तियों की स्थापना करवाई थी। परन्तु गुम्बज का कुछ भाग गिरने से एक दो मूर्तियाँ खंडित हो गई।आगे भी मूर्तियाँ खंडित न हो इसलिए सब मूर्तियँा मंदिर परिसर से हटाकर कुलगुरू पंडित शिवनारायण जी व्यास के घर स्थापित कर दी गई।

स्न1970 में स्व. खुशीलाल जी झंवर सेवदा,स्व.मिश्रीलाल जी प्रगट (तापड़िया) इच्छावर, श्री अनोखीलाल जी आष्टा एवं डॉ.छोगालाल झंवर हरदा वालों ने रूपया एकत्रित कर मंदिर परिसर में एक कुआ बनवाया एवं मंदिर के पुननिर्माण के लिए आठ खम्बों का निर्माण किया। यह कार्य श्री विनोद कुमार श्रीकिशन सोमानी खण्डवा, जो उस समय वहाँ शिक्षक के पद कार्यरत थे, के निरीक्षण में करवाया गया था।

दिनांक 11 मार्च 1995 को डॉ.छोगालाल झंवर, श्री अखिलेश गुप्ता आर्किटेक्ट खण्डवा,डॉ. बालकृष्ण बाहेती खण्डवा,एडव्होकेट श्री अनिल चौहान हरदा एवं श्री प्रेमप्रकाश झंवर हरदा, अवन्तीपुर– बड़ोदिया गये और मंदिर के पुर्ननिर्माण के लिए सम्पूर्ण परिसर का व मंदिर का नक्शा बनाकर समाज बंधुओं के आर्थिक सहयोग स मंदिर का निर्माण कराया तथा सभी समाज बंधुओं को आमंत्रित कर 27 जनवरी–1996 को प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया गया।

इस गाँव की एक विशेषता भी है कि मंदिर से पश्चिम की ओर किले के अवशेष दिखाई देते हैं, इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि निश्चय ही यह गाँव एतिहासिक महत्व का है। यह मालूम नहीं कि इस किले का निर्माण किसने किया और कब किया, यह एक शोध का विषय है। हो सकता है कि यह किला हमारे पूर्वजों द्वारा ही बनाया गया हो।

इस किले के परिसर में स्व.गरीबनाथ बाबा का समाधि–स्थल एवं धर्मशाला है। यहाँ हर साल रंग पंचमी के दिन मेला लगता है जिसमें आस–पास के करीब 25 हजार लोग एकत्रित होते हैं, उनके समक्ष 9 लकड़ियों के खम्बों (एक–एक खम्बा नौ–नौ फीट ऊंचा है जिसकी मोटाई 7–7 इंच है) पर ध्वज लगी है। यह जमीन में 10–12 फुट गढ़ा है। रंग पंचमी के दिन इसे निकाला जाता है और रंग किया जाता है, नया ध्वज नारियल चढ़ाया जाता है। इसमें विशेषता यह है कि ध्वज गाढ़ते समय रूपये–पैसे,पान, चावल, व नमक डाला जाता है परन्तु अगले वर्ष जब यह निकाला जाता है तो पान हरा ही रहता है वह सड़ता नहीं, रूपये–पैसे, चावल नारियल भी ऐसे दिखाई दते है जैसे आज ही डाले हों।

ऐसी है हमारी प्रथम शरण स्थलीय जहाँ संत महात्माओं का निवास रहा है। केन्द्रीय कार्यकारिणी ने इस एतिहासिक महत्व के मंदिर को समाज के तीर्थस्थल के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है एवं इसके लिये प्रयास प्रारंभ कर दिये हैं।

।। जय महेश ।।

''आस्था स्थल'' का प्रसंगति स्वरुप

श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर

अवन्तीपुर बड़ोदिया

1000 से 1100 वर्ष पूर्व राजस्थान के डीडवाना के डीडू माहेश्वरीयों के 72 खापों में से 32 खापों के माहेश्वरी राजा के दुर्व्यवहार से गुजरात के धाकगढ़ में जा बसे और धाकड़ माहेश्वरी कहलाए। कालान्तर में मध्यभारत के इस ग्राम अवंतीपुर बड़ोदिया में पहला पड़ाव डाला और इस मंदिर का निर्माण विक्रम संवत 1272 में किया। यह मंदिर हमारे पूर्वजों की धरोहर है और समाज ने इसे सहजने का संकल्प किया है।

॥ जय महेश ॥